**Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,**
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2016 = 6.177, www.srjis.com
UGC Approved Sr. No.49366, NOV-DEC 2017, VOL- 4/37

# उत्तराखण्ड की केदारनाथ आपदा का विभिन्न स्थानों पर तत्कालीन प्रभाव

**डॉ0 दुर्गेश नन्दिनी**

*असिस्टेंट प्रोफेसर(बी0 एड0), राठ महाविद्यालय पैठाणी, पौडी गढवाल, उत्तराखण्ड*

*ई0 मेल0 drdnbalodi@gmail.com*

**Abstract**

*उत्तराखण्ड राज्य में 16–17 जून 2013 को जगह–जगह बादल फटने से हुयी मूसलाधार वर्शा की वजह से कई जगह बाढ़, आकस्मिक –बाढ़, भूस्खलन, भू–धंसाव, भू–कटाव, पहाड़ों से पत्थर एवं बोल्डर गिरना, हिमस्खलन आदि गंभीर दुर्घटनाएं भयावह रूप से भुरू हो गयी। इन सबने प्रलंयकारी स्थिति पैदा कर दी थी। प्रकृति का यह प्रकोप ''केदारनाथ आपदा'' के नाम से जाना जाता है। प्रकृति के इस तांडव में कई जानें चली गयी, मानवीय सम्पत्ति का व्यापक और गम्भीर नुकसान हुआ और बडे–बडे निर्माण कार्य धवंस्त हो गये।*

*उत्तराखण्ड के 5 जिलों रूद्रप्रयाग, चमोली, उत्तरकाशी, पिथौरागढ़ एवं बागेश्वर पर इस आपदा ने गम्भीर नकारात्मक प्रभाव डाले। इन सभी में रूद्रप्रयाग जनपद और इस जनपद के विभिन्न महत्वपूर्ण स्थानों को जन–धन, सडकें, पुल, प्रोजेक्ट्स एवं विभिन्न निर्माणों आदि को गंभीर क्षति पहुॅची। प्रस्तुत अध्ययन आपदा के दौरान उत्तराखण्ड के विभिन्न महत्वपूर्ण स्थानों पर आपदा के तत्कालीन प्रभावों का वर्णन किया गया है।*

***की वर्ड–*** *उत्तराखण्ड, केदारनाथ आपदा, प्रभाव*

## प्रस्तावना–

उत्तराखण्ड की केदारघाटी में एक स्थान पर लोक–निर्माण विभाग उत्तराखण्ड (लो0नि0वि0उ0) द्वारा लगाये गये बोर्ड में पंक्तियां अंकित थी–

***रौद्र रूद्र ब्रह्मण्ड प्रलयति,***

***प्रत्रयति प्रलेयनाथ केदारनाथ।***

**भावार्थ–** अपने तृतीय नेत्र की अग्नि ज्वाला से ब्रह्मण्ड को भस्म करने में समर्थ रूद्र रूप श्री केदारनाथ जी हैं ।

उक्त पंक्तियां निश्चित ही दिनॉक 16–17 जून 2013 के संदर्भ में सार्थक रहीं । पवित्र–पावन, आत्मिक भाांति प्रदान करने वाली, उत्तराखण्ड के रूद्रप्रयाग जनपद में स्थिति शिव–स्थली केदारनाथ–धाम पर मानो 16–17 जून 2013 को शिव कुपित हो गये हों । साक्षात् शिव मानो अपने रौद्र रूप में खड़े हों । आसमान में मानों क्रोधित शिव के

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

काले–केश बादलों के रूप में बिखर पड़े हो, जो सर्वस्व लील लेने को तत्पर थे। सन् 2013 की 16–17 जून को उत्तराखण्ड में हुयी विना ालीला में न सिर्फ उत्तराखण्ड ने अपितु सम्पूर्ण भारतवर्श ने बहुत कुछ खोया। इस आपदा ने उत्तराखण्ड के 5 जिलों में तबाही कर उनको गहरी चोटें दी। किन्तु इन सब में तीर्थ स्थल उत्तराखण्ड के रूद्रप्रयाग जिले में स्थित केदारनाथ सर्वाधिक प्रभावित हुआ इसी वजह से 16–17 जून 2013 में उत्तराखण्ड में आयी आपदा ''केदारनाथ आपदा'' के नाम से जानी जाती है।

उत्तराखण्ड राज्य में 16–17 जून 2013 को जगह–जगह बादल फटने से हुयी मूसलाधार वर्शा की वजह से कई जगह बाढ़, आकस्मिक –बाढ़, भूस्खलन, भू–धंसाव, भू–कटाव, पहाड़ों से पत्थर एवं बोल्डर गिरना, हिमस्खलन आदि गंभीर दुर्घटनाएं भयावह रूप से भ्ाुरू हो गयी। इन सबने प्रलंयकारी स्थिति पैदा कर दी थी। प्रकृति के इस तांडव में कई जानें चली गयी, मानवीय सम्पत्ति का व्यापक और गम्भीर नुकसान हुआ और बडे–बडे निर्माण कार्य धवंस्त हो गये।

इस प्रलयंकारी आपदा की भयावहता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इस आपदा को भारत में वर्श 2004 में आयी वि व प्रसिद्ध आपदा ''सुनामी'' के बाद की अति वीभत्स आपदा कहा गया तथा इसे ''हिमालयन सुनामी'' नाम दिया गया।

उत्तराखण्ड में 14 जून 2013 से भ्ाुरू हुयी वर्शा, 15–16–17 तारीख तक यू बढ़ गयी मानों आकाश से विपदा बरस रही हो। जिसने पूरे उत्तराखण्ड को परेशानी में डाल दिया। इस आपदा के घटनाक्रम को संक्षिप्त रूप में कुछ इस तरह से व्याख्यित किया जा सकता है –

– जून 2013 में उत्तराखण्ड में मानसून लगभग 2 सप्ताह पहले पहॅुच गया ।

– समय से पहले पहॅुचा दक्षिण–पश्चिम मानसून, पश्चिमी विक्षोप से टकराकर समूचे उत्तराखड–हिमालयी क्षेत्रों में घने बादलों के रूप में फैल गया ।

– 14 जून 2013 से शुरू हुयी बारिश 15 तारीख से अतिवृश्टि में बदल गयी और बहुत कम समय में अत्यधिक पानी भारी वर्शा के रूप में धरा पर आ गया ।

– अत्यधिक वर्शा होने से नदियों में उनकी क्षमता से बहुत अधिक पानी हो गया। नदी तलों में अवसादों का जमाव एवं तटों में भारी कटाव होने लगा ।

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

– मलवा, बोल्डर, हिमोढ़ के साथ उत्तराखण्ड हिमालयी क्षेत्रों की तमाम नदियों का बहाव बेहद तीव्र व असामान्य तथा नदियों का रूप बेहद प्रचंड हो गया ।

– इस तरह मलवा, बोल्डर, हिमोढ़ के साथ अपने प्रचंड रूप में बहने वाली नदियों के मार्ग में जो कुछ भी आया उसे वह अपने साथ बहा ले गयी । चाहे वह मानव–जीवन हो या पशु जीवन, छोटी –बड़ी बस्तियॉ, भवन, इमारतें, बड़े–बड़े निर्माण, मार्ग में आने वाली किसी भी चीज को प्रचंड रूप धारण किये हुये इन नदियों ने नही बख्शा।

**शोध सामग्री और भाोध विधि–**

प्रस्तुत अध्ययन हेतु ऑनलाइन उपलब्ध विभिन्न भाोध पत्रों, प्रकाशित रिपोर्ट एवं उपलब्ध आंकडों का अध्ययन एवं सर्वेक्षण किया है, साथ ही सर्वेक्षण के दौरान व्यक्तिगत अनुभवों को भी स्थान दिया गया है।

**उत्तराखण्ड फ्लड़ (केदारनाथ आपदा) का प्रभाव –**

इस प्रलय से समूचा उत्तराखण्ड ही अस्त–व्यस्त हो गया था, कहें तो उत्तराखण्ड का सामान्य जन जीवन ही पटरी से उतर बैठा। लेकिन उत्तराखण्ड के पांच जिले – रूद्रप्रयाग, चमोली, उत्तरका ाी, पिथौरागढ़ एवं बागे वर पर इस आपदा का का सर्वाधिक प्रभाव देखा गया। इनमें से भी रूद्रप्रयाग जनपद में स्थित हिन्दू तीर्थ–स्थल केदारनाथ और पूरी मन्दाकिनी घाटी इस आपदा द्वारा गंभीर रूप से प्रभावित हुयी। विभिन्न स्थानों पर इस आपदा का निम्न प्रभाव पडा–

**जनपद पिथौरागढ़ पर प्रभाव –**

नेशनल इंस्टिटूयट ऑफ डिजास्टर मैनेजमेंट (nidm) की रिपोर्ट उत्तराखण्ड डिजास्टर 2013 के अनुसार पिथौरागढ़ जनपद की मुनस्यारी और घारचुला तहसील के अर्न्तगत आने वाला क्षेत्र इस दौरान सर्वाधिक प्रभावित हुआ। इस क्षेत्र की बहुत सी सड़कों को गम्भीर क्षति हुयी परिणामस्वरूप बहुत से गॉवों का सड़क सम्पर्क खत्म हो गया ।

पिथौरागढ़ में तवाघाट और मंगती को जोड़ने वाली सड़क पूरी तरह से बह गयी । वहीं लमा और मारतोली के बीच की सडकों पर अत्यधिक भूस्खलन हुआ एवं कुछ पुल भी नदी के बहाव में आकर बह गये। तवाघाट क्षेत्र में काली नदी का अत्यधिक बहाव जगह–जगह भूस्खलन और नदियों पर बने पुल टूटने का कारण रहा । धारचुला के कई क्षेत्र पिथौरागढ़ से कट गये ।

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

**उत्तरकाशी जनपद पर प्रभाव –**

एन0आई0डी0एम0 की रिपोर्ट, उत्तराखण्ड डिजास्टर 2013 के अनुसार उत्तरकाशी में गंगानी से परे का क्षेत्र सड़कों के बह जाने से कट गया । भटवाड़ी और गंगानी के मध्य की सड़क को गम्भीर क्षति हुयी । हर्शिल से गंगोत्री जाने वाली रोड़ धराली में एवं हर्शिल से उत्तरकाशी जाने वाली रोड सुवखी में भूस्खलन एवं भू–कटाव के कारण ब्लॉक हुयी जिस कारण हर्शिल और उसके आस–पास के गांवों में तीर्थ यात्री फंसे रहे । इसी प्रकार तमाम सड़कों के क्षतिग्रस्त होने से यमुनोत्री धाम में भी जगह–जगह तीर्थ यात्री फंसे रहे ।

इस आपदा में उत्तरका ाी में मणिकर्णिका घाट में स्थित प्रसिद्ध गंगा मंदिर बह गया । भागीरथी के उफान में यहॉ कई घर, होटल यूंही समा गये और बहुत सी इमारतों व निर्माणों को गम्भीर क्षति पहॅुची ।

**चमोली जनपद पर प्रभाव –**

चमोली जनपद का घघारिया, पुलना, गोविन्द घाट और बद्रीनाथ क्षेत्र इस आपदा काल के दौरान बुरी तरह प्रभावित हुये । जोशीमठ से ऊपर बद्रीनाथ के ऊपर की समस्त सड़कें आसमान से उतरती नदी के साथ बह गये , जिसके कारण गोविन्दघाट और बद्रीनाथ के क्षेत्रों में यात्री फंसे रहे ।

**आपदा और रूद्रप्रयाग जनपद –**

इस आपदा से सर्वाधिक प्रभावित जिला रूद्रप्रयाग है। वास्तविकता यह है कि जून 2013 की 16 एवं 17 तारीख को आपदा रूद्रप्रयाग जनपद में स्थित हिन्दुओं के पवित्र तीर्थ स्थल केदारनाथ धाम पर आयी । जिसने ऊॅचे हिमालय पर्वतों से नीचे उतरते हुये पूरी मन्दाकिनी घाटी को इतनी गम्भीर चोटें दी जिनसे उभरने में अभी कितना वक्त लगेगा, कुछ कहा नहीं जा सकता ।

16 तारीख जून 2013 को अतिवृश्टि के कारण सरस्वती एवं दूध–गंगा नदी में आयी बाढ़ एवं 17 जून 2013 चौराबाड़ी ताल फटने से केदारनाथ धाम पर 24 घंटे के अंदर ही दो बार प्रकृति ने इतने तीव्र प्रहार किये जिससे केदारनाथ क्षेत्र ही नहीं अपितु पूरी मन्दाकिनी घाटी करहा उठी । इस प्रहार की पीडा एवं खौफ केदारनाथ क्षेत्र एवं मन्दाकिनी घाटी में

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

आज भी देखी जा सकती है। इस आपदा ने एक ओर केदारनाथ क्षेत्र में ला ों के अम्बार लगा दिये थे वहीं पूरी मन्दाकिनी घाटी में दु वारियों की पहाड़ खड़े कर दिये ।

इस आपदा ने रूद्रप्रयाग जनपद पर व्यापक और गंभीर प्रभाव डाले जो निम्न हैं –

**चौराबाड़ी ताल का विकृत –स्वरूप –**

चौराबड़ी ताल ( $30^0$ 44′ 50′′ उ0 $79^0$ 03′ 40′′ पूर्व ) केदारनाथ कस्बे से ऊपर को लगभग 4 किमी0 के पैदल मार्ग पर अवस्थित है। इसकी समुद्र तल से ऊॅचाई 3855 मी0 है। यह ताल चौरावाड़ी ग्लेशियर के हिमनद के मुहाने पर हे। केदारनाथ जिस मन्दाकिनी नदी द्वारा बनायी गयी छोटी सी घाटी पर स्थित है वह मन्दाकिनी नदी चौराबाड़ी ताल से ही निकलती है। इस ताल को गांधी–सरोवर नाम से भी जाना जाता है। 17 जून 2013 को उत्तराखण्ड में आयी जल –प्रलय इसी चौराबाड़ी ताल के टूटने की वजह से आयी थी ।

आपदा काल मे अतिवृश्टि से चौराबाड़ी ग्लेि ायर बहुत तेजी से पिघलने लगा । ग्लेि ायरों के तीव्रता से पिघलने और आसमान से बहुत अधिक पानी बरसने से चौराबाड़ी ताल में इसकी क्षमता से अधिक जल जमा होकर ताल से अतिप्रवाह करने लगा और अपनी सह्मता सीमा से अधिक जल का दबाव न सह सकने की वजह से चौराबाड़ी ताल का एक हिस्सा अचानक ढह गया । जो बर्फ के टुकड़ों, मिट्टी, पत्थरों और बोल्डर से बना था । इस हिस्से से निकला पानी अपने साथ बहुत बड़ी मात्रा में अवसाद, पत्थर, बोल्डर, हिमोड़, मिट्टी आदि का सैलाव लिये भीशण तीव्रता से प्रलयंकारी बन केदारनाथ की और उतर पड़ा ।

चौराबाड़ी ताल का विखण्डन इस आपदा से हुयी बड़ी क्षति में से एक है।नीचे दो तस्वीरें दी गयी है जो चौराबाड़ी ताल की आपदा से पहले और आपदा के बाद की है ।

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

Source : Glacial lake outburst floot hazard assessment part of Uttarakhand India, Anand Amit

उपरोक्त दोनो चित्रों की तुलना इस बड़ी क्षति को स्वतः ही स्पश्टतः बयां कर रही है, कि कभी बेहद खूबसूरत, मनमोहक, प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण ताल, आज ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो इस ताल ने प्रकृति पर प्रकृति के नियमों के विरूद्ध अतिक्रमण किया रहा हो जिसे स्वयं प्रकृति के प्रशासन ने बुल्डोजर और जे0सी0बी0 से बेहद सख्ती से हटा दिया हो ।

**केदारनाथ कस्बे पर प्रभाव –**

चौराबाड़ी ताल ये लगभग 4 कि0मी0 नीचे मन्दाकिनी नदी के तट पर स्थित केदारनाथ कस्बे को इस भयावह आपदा ने पूरे घटनाक्रम के दौरान चौबीस घंटे के अंतराल में ही दो बड़े आघात दिये । यह –वह स्थान है जहॉ स्वयं भगवान शिव ज्योर्तिलिंग के रूप में विराजते हैं, लेकिन प्रकृति के इस कुपित रूप से स्वयं भगवान शिव भी अपने भक्तो की रक्षा न कर सके और यहॉ हजारों मौतों का अम्बार लग गया ।

नीचे केदारनाथ कस्बे की दो तस्वीरें दी गयी हैं जिनमें से एक तस्वीर आपदा से पहले की है और दूसरी तस्वीर आपदा के बाद की है –

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

Source – www.google.co.in/kedarnath+tample picture

उपरोक्त दोनो चित्रों की तुलना करने के बाद भाायद केदारनाथ कस्बे को आपदा द्वारा हुयी क्षति का वर्णन करने के लिये भाब्दों की आव यकता नहीं है। प्रथम दृश्टया ही ज्ञात हो रहा है कि केदारनाथ मन्दिर चारों ओर से जिस घनी बस्ती से घिरा हुआ था वह पूरी तरह से बह चुकी है। मानों इस बेतरतीन निर्माण से स्वयं भगवान शिव का दम घुट रहा हो और उन्होंने स्वयं ही इसे हटा दिया हो ।

हृदयेश जोशी की किताब *''तुम चुप क्यों रहे केदार''* के अनुसार –

– 16 जून 2013 को अतिवृश्टि के कारण भैरोनाथ मंदिर वाली पहाड़ी टूटने लगी एवं केदारनाथ से भैरों मंदिर जाने वाला मार्ग बंद हो गया ।

– 16 जून 2013 शाम के वक्त जब बाढ़ आयी तब सबसे पहले केदारनाथ में बना हैलीपैड धंस गया और नदी उसे अपने साथ वहा ले गयी ।

– केदारनाथ में नदी पर बने दो पुल पानी के तेज बहाव के साथ बह गये ।

– एन0आई0डी0एम0 की ''इडिया डिजास्टर रिपोर्ट –2013'' के अनुसार 16 जून 2013 की शाम आयी बाढ़ में कस्बे का ऊपरी हिस्सा बह गया । इसमें भांकराचार्य समाधि, जल निगम गेस्ट हाउस, भारत सेवा संघ आश्रम, बिड़ला आश्रम आदि बाढ़ में पूरी तरह बह गये ।

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

– त्रासदी की उन घड़ियों में उस वक्त केदारनाथ में बहुत से तीर्थ यात्री थे । इस त्रासदी में हजारों तीर्थ यात्री काल के गर्त में समा गये।

**रामबाड़ा का अस्तित्व खत्म –**

गौरीकुण्ड ऋशिकेश–केदारनाथ राश्ट्रीय राजमार्ग (NH 109) का आखिरी मोटर–हेड है । वहॉ से केदारनाथ के लिये पैदल यात्रा शुरू होती है । गौरीकुण्ड से पैदल मार्ग के 7 किमी0 पर एक छोटा सा कस्बा रामबाड़ा मन्दाकिनी नदी के दाहिने तट पर था । 16 जून 2013 की भाम को आयी बाढ़ के साथ यह पूरा कस्बा बह गया । उत्तराखण्ड के मानचित्र से रामबाड़ा यूं हटा मानों यहॉ कुछ कभी था ही नहीं ।

नीचे रामबाड़ा क्षेत्र की आपदा से पहले और आपदा के बाद की तस्वीरे है जो ऊपर दी गयी जानकारी की पुश्टि के स्पश्ट साक्ष्य हैं ।

**रामबाड़ा क्षेत्र आपदा से पहले** **रामबाड़ा क्षेत्र आपदा के बाद**

Source – Anand.Amit, March 2014, Glacical lake flood hazards Assemeant in – part of uttarakhand, India

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

**गौरीकुण्ड भी हुआ प्रभावित –**

गौरीकुण्ड सोनप्रयाग से 5 किमी0 की दूरी पर मन्दाकिनी नदी के दाहिने तट पर स्थित है। यह केदारनाथ आपदा का वह पड़ाव है जहॉ से केदारनाथ के लिये पैदल यात्रा भ्रारू होती है ।

गौरीकुण्ड में आपदा से पहले तक तप्त कुण्ड था जहॉ स्नान करने के बाद ही श्रद्धालु बाबा केदारनाथ के दर्शन करने हेतु अपनी पैदल यात्रा आरम्भ करते थे । 16–17 जून 2013 की आपदा में यह तप्तकुण्ड भी आपदा के भेंट चढ़ गया ।

इस आपदा के दौरान गौरीकुण्ड बाजार में मलवा घुसने से कई दुकानें और आवास तबाह हो गये । इस सब में सोनप्रयाग से गौरीकुण्ड तक की सड़क जगह–जगह बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गयी एवं कुछ जगहों पर सड़क बह गयी ।

**मन्दाकिनी घाटी को (सोनप्रयाग से रूद्रप्रयाग) आपदा से मिली चोटें –**

इस आपदा ने पूरी मन्दाकिनी घाटी को ऐसी चोटें दी कि पूरी घाटी करहा उठी । आज इतने वर्शों बाद भी इस घाटी की सिसकियां हृदय द्रवित कर देती हैं । प्रकृति द्वारा दिये गये गहरे जख्म आज भी यहॉ स्पश्ट देखे जा सकते हैं ।

मन्दाकिनी और सोन–गंगा के संगम पर, मंदाकिनी नदी के दाहिने तट पर बसा गौरीकुंड से 5 किमी0 पहले केदारनाथ यात्रा का एक प्रमुख स्टेशन है सोनप्रयाग कस्बा।

**मन्दाकिनी घाटी(कुण्ड–रूद्रप्रयाग) जगह–जगह हुयी तबाही के कुछ दृश्य**

चित्र : प्रत्यक्षदर्शी द्वारा खीचे गये

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

मन्दाकिनी नदी ने इस कस्बे के दाहिने तट की दीवार को तोड़ा। सोनप्रयाग बाजार नदी द्वारा लायी गयी 5–6 मीटर की गाद से पट गया । एक स्थानीय व्यक्ति ने मुझे बताया कि वर्तमान में मन्दाकिनी जो सोनप्रयाग कस्बे के लगभग समानान्तर बह रही है वह नदी का आपदा से पहले कस्बे से काफी नीचे बहती थी । आपदा के बाद नदी का स्तर काफी उठ गया । इसके अलावा सोनप्रयाग में कई मकान, इमारत, दुकानों, होटलों की भी इस आपदा में बलि चढ़ गयी ।

इस आपदा ने सोनप्रयाग से आगे बढ़ते हुये सीतापुर, बडासू, खात गांव, सेमी, बांसबाडा, स्यालपुर, चंद्रापुरी, सौड़ी, पढालीधार, गंगानगर, जवाहर नगर, विजय नगर, अगस्त्यमुनि(पाटयूं, चाका,सिल्ली) सिल्ली चाका, सुमाड़ी, तिलकनगर आदि छोटे–बड़े कस्बों में जमकर तबाही मचाई । जगह–जगह नदी ने कई–कई फीट गाद बिछा दी, सड़के बह गयी । सेमी गांव में इस तरह भू–धसाव हुआ है कि वह खतरे की जद में आ गया । मन्दाकिनी घाटी में बहुत से पुल बह गये । तिलवाड़ा में जी0एम0वी0एन0 गेस्ट हाउस समेत कई महत्वपूर्ण इमारतों को इतनी गम्भीर क्षति पहुॅची कि वे काम चलाने लायक तक नही बचे । यही हाल रूद्रप्रयाग का भी रहा ।

16–17 जून 2013 की अतिवृश्टि से उपजी बाढ़ ने आगे चलते हुये काफी नुकसान पहुॅचाया । श्रीनगर में पौराणिक महत्व के कई मन्दिरों को यह अपने साथ बहा ले गयी, जिसमें प्रसिद्ध केशोराय मठ भी था । श्रीनगर की भाक्ति बिहार कालोनी कई फुट गाद से दब गयी । श्रीनगर में स्थित एस0एस0बी0 ट्रेनिग ऐकेडमी की मुख्य इमारत ढ़ह गयी ।

**स ास्त्र सीमाबल ट्रेनिग ऐकेडमी**

Source- www.ndtv.com

**केशोराय मठ श्रीनगर**

Source- www.uttarakhand/temples.in

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

ITI Building Srinagar

Source- https://the/108946/uttarakhand –Srinagar.

श्रीनगर में अवस्थित आई0टी0.आई0 की दो मंजिली बिल्डिग की नीचे की मंजिल नदी द्वारा लायी गयी गाद से दब गया ।

उपरोक्त वर्णन संक्षिप्त है और आपदा द्वारा हुयी क्षति पर एक सरसरी निगाह जैसा है । लेकिन यह विवरण इस आपदा द्वारा उत्पन्न भयावह परिणामों की झलक दिखाने में सक्षम है।

**कालीमठ घाटी एवं केदारनाथ आपदा –**

केदारनाथ आपदा के दौरान रूद्रप्रयाग जनपद में अतिवृश्टि के कारण हर नदी के जल के स्तर में अप्रत्याशित वृद्धि हुयी । इस अप्रत्याशित जल स्तर वृद्धि की जद में, मन्दाकिनी नदी की एक प्रमुख सहायक नदी काली गंगा (सरस्वती) के दाहिने तट पर स्थित कालीमठ भी आया । कालीमठ गुप्तका ाी के भौन्सारी से 9 किमी0 गुप्त काशी–कालीमठ राज्य राजमार्ग (NH 36) पर स्थित है। यहॉ प्रसिद्ध शक्ति पीठ मां काली का मान्यता प्राप्त मन्दिर है।

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

इस आपदा के दौरान काली–मन्दिर परिसर को गम्भीरर क्षति पहुंची एक प्रत्यक्षदर्शी के अनुसार कालीमठ मन्दिर को सड़क से जोड़ने वाला पुल एक झटके में काली गंगा नदी के बहाव में बह गया ।

इस दौरान गुप्तकाशी के भौन्सारी से कालीमठ को जाने वाली सड़क शुरूआत में ही पूरी तरह से वह गयी, जिसके कारण पूरी कालीमठ घाटी का सड़क–सम्पर्क दुनिया से कट गया । इस मार्ग पर आगे भी भूधंसाव व भूस्खलन हुये । इस घाटी में बसे गॉव जाल तल्ला, एवं कुणजेठी भीशण भूस्खलन एवं भू–धंसाव से खतरे की जद में आ गये । जाल तल्ला में बहुत सी कृशि भूमि इस आपदा की भेंट चढ़ गयी ।

कालीमठ घाटी के आपदा के बाद के दृश्य

क्षेत्रीय भ्रमण के दौरान खीचीं गई

उपरोक्त छायाचित्र कभी बेहद खूबसूरत कालीमठ घाटी की आपदा द्वारा विकृत हुयी स्थिति को स्पश्ट करता है।

**निश्कर्श–**

ऊपर वर्णित विवरण से प्रारम्भिक तौर पर यह तो स्पश्ट होता है कि उत्तराखण्ड में ऊॅचे हिमालयी पहाड़ों से मैदानी इलाकों तक और इससे भी आगे के क्षेत्रों में जून 2013 को आयी ''केदारनाथ आपदा'' के नाम से प्रसिद्ध आपदा ने जमकर बरबादी का खेल खेला। अपने प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण उत्तराखण्ड को कुरूपित कर दिया। विभिन्न प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण स्थानों के अस्तित्व को या तो समाप्त कर दिया या उन्हें इतनी गम्भीर चोटें पहुॅचायी कि उनका अस्तित्व ना के बराबर रह गया।

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

## संदर्भ सूची

**1. Books-**

जोशी, हरदयेश(2014): ***तुम चुप क्यों रहे केदार,*** नवीन शाहदरा, दिल्ली, आलेख प्रकाशन।

Goyel, R.S (2014) : ***Gender issues in Uttarakhand Disaster of June, 2013***. *Disaster Mitigation and Management Center Uttarakhand Secretariat, Dehradun.*

Sajwan, K.S and Khanduri, Sushil (2014) : ***Geological Investigation in Rudraprayag District with Special Reference to Mass Instability***. *DMMC Uttarakhand Secretariat, Dehradun.*

पंत, लक्ष्मी प्रसाद(2016): ***हिमालय का कब्रिस्तान,*** दरियागंज नयी दिल्ली, वाणी प्रकाशन।

**2.Reports-**

***A report on Kedarnath Devastation(****December 2013****).*** *Wadia Institute of Himalayan Geology. Dehradun.*

Prakash, Surya(2013): ***Brief Peport on visit to Alaknanda Valley, Uttarakhand Himalaya During 22-24 June 2013***. *NIDM. New Delhi, Available at, www.indiaenrironmentalportabl.org.in-* ***Rudraprayag Status Report*** *(Oct, 2013): District Level, Social Sector Needs, Rudraprayag*

*Chief Education Officer (2014):* ***Official Information***. *Distric Rudraprayag.*

*NIDM (2014): National Disaster Risk Reduction Portal – Uttarakhand. Available on www.nidm.gov.in.*

*Satendra, Dr. Kumar., et al. (2014)* ***India Disaster Report 2013***. *National Institute of Disaster Management, Delhi.*

***Social Sector Plan Status Report- Rudraprayag****, (March 2014). Available at www.rebuilduttarakhand. in.*

*NIDM (2015)* ***: Uttarakhand Disaster 2013,*** *National Institute of Disaster Management. Government of India.*

*Disaster Mitigation and Management Centre (February,2016): Official Press Vigyapti. Uttarakhand Secretariat, Dehradun.*

3, **Webliography**

*https://hi.wikipedia.org*
*www.himalaya 2000.com*
*http://uk.gov.in*
*wikipedia.org/wiki/2015_ दक्षिण_भारतीय_बाढ*
*wikipedia.org/wiki/2014_ उत्तर_भारत_बाढ*
*http:/leh.nic.in/Disaster/20management/20leh.pdf*
*https://hi.wikipedia.org/wiki/2004_indian_ocean_earthquake_and_tsunami.*
*www.slideshare.com*
*www.post.jagran.com*
*www.ndtv.com*
*https://thewire.in/108946/uttarakhand_srinagar_flood*
*india.com/news/uttarakhand/uttarakhand_landslide_strome_kill_11_injure_in_chakrata_1888196.html.*
*https://en.wikipedia.org/wiki/avalanche#/media/file:Avalanche_on_everestJPG.*
*dmmc.uk.gov.in/files/pdf/complete_sdmap_pdf*
*nidm.gov.in/pdf/dp/uttara.pdf*
*www.rudraprayag.nic.in*
*www.disaster_report.com*
*www.imd.gov.in*
*gbpihdenvis.nic.in/IHR_Portal.html*

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*